ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL
वर्ष: 9, अंक: 33, जनवरी-मार्च 2022

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

मूल्य :100 रुपये

विद्यार्थी मंच

उस पार से .....

अज्ञेय

(7 मार्च 1911 - 4 अप्रैल 1987)

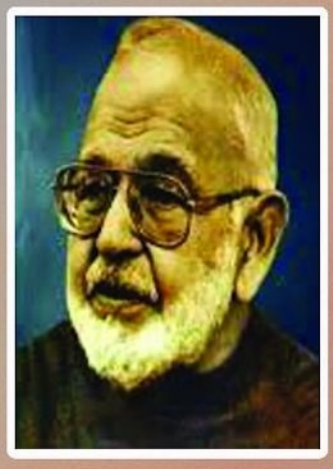

नीतियाँ सापेक्ष्य हैं। रूढ़ियाँ निरंतर बदलती रहती हैं। अतः नैतिक कसौटियाँ सापेक्ष्य हैं, प्रगति भी सापेक्ष्य है। फलतः आज जो प्रगति है, कल वही प्रति-गति भी हो सकती है। और यदि ऐसी है, तब प्रगतिवादी आलोचक की कसौटियाँ साहित्य की कसौटियाँ नहीं हैं, क्योंकि साहित्य आत्यंतिक होने का दावा करता है, शाश्वत और चिरंतन होने का दावा करता है । वह माँगता है कि जो उस पर निर्णायक बनकर बैठे उसकी कसौटी भी शाश्वत और चिरंतन हो।

- त्रिशंकु

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

मुक्तांचल

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

वर्ष-9, अंक- 33, जनवरी-मार्च 2022

संपादक : **डॉ. मीरा सिन्हा**

प्रकाशक : **हावड़ा विद्यार्थी मंच**

प्रबंध संपादक : **सुशील कुमार पांडेय**

कला संपादक : **शुभागता श्रीवास्तव**

प्रूफ संशोधक : **विनोद यादव**

परामर्श एवं विशेष सहयोग :

प्रो. दामोदर मिश्र : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, विद्यासागर विश्वविद्यालय

डॉ. कृष्ण कुमार : अध्यक्ष, गीतांजलि बहुभाषिक साहित्यिक समुदाय, (बर्मिंघम, यू.के.)

डॉ. पंकज साहा : खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

डॉ. अरुण कुमार : प्राक्तन प्रोफेसर, राँची विश्वविद्यालय

डॉ. रणजीत सिन्हा : मिदनापुर कॉलेज (ऑटोनोमस), मिदनापुर

डॉ. निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय, आसनसोल

डॉ. रामप्रवेश रजक : हिंदी विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय

व्यवस्थापन एवं प्रबंधन :

विनीता लाल, पार्वती शॉ, परमजीत पंडित, सरिता खोवाला एवं बलराम साव (**9831889154**)

संपर्क एवं प्रसार :

चाँदनी सिन्हा (बर्मिंघम, यू.के.) : +447411412229

कुणाल किशोर (के.वि. हिमाचल प्रदेश): 7998837003

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

पीयर रिव्यूड टीम :

डॉ. धूपनाथ प्रसाद : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ. विश्वजीत भद्र : प्राध्यापक, नेताजी नगर कॉलेज (कलकत्ता विश्वविद्यालय)

प्रो. मोहम्मद फ़रियाद : प्राक्तन अध्यक्ष, जनसंचार विभाग, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद

डॉ. सुनील कुमार 'सुमन': प्रभारी, क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

प्रो. मंजु रानी सिंह : विश्वभारती, शांतिनिकेतन

प्रो. अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात

प्रो. मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ. सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ. अंजनी कुमार झा : एसोसिएट प्रोफेसर, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतीहारी (बिहार)

डॉ. शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

मुक्तांचल: A/c- 50200014076551, HDFC BANK BURRABAZAR, KOLKATA-700007, IFSC CODE- HDFC0000219

संपादकीय कार्यालय :

आधुनिक अपार्टमेंट, 6/2/1 आशुतोष मुखर्जी लेन
सलकिया, हावड़ा-711106, पश्चिम बंगाल
संपर्क - 033-26751686, 9831497320, 9681105070
ई-मेल - muktanchalpatrika@gmail.com
sinhameera48@gmail.com

मुद्रक : शिक्षण, 50, सीताराम घोष स्ट्रीट, कोलकाता-700009

पत्रिका का मूल्य : एक अंक - 100 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक- 500 रुपये, आजीवन-2500 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक-550 रुपये, आजीवन-3000रु.

डाकखर्च (प्रत्येक अंक के लिए)अतिरिक्त 30 रुपये।

अवस्थिति

शोध समीक्षण सृजन संचार

6 संस्तुति

आलेख :

7 श्रीनारायण पाण्डेय — भारतीय स्वाधीनता के 75 वर्ष

12 रामनिहाल गुंजन — डॉ. रेवतीरमण का समीक्षकीय विवेक

15 अरविंद कुमार — सत्यवती मालिक की कहानियाँ स्मृतियों के गहरे बुने तार

24 शुभ्रा उपाध्याय — मजरूह सुल्तानपुरी के गीतों में वैविध्य का वैभव: संदर्भ–हिंदुस्तानी फिल्म

संस्मृति :

28 प्रीति सिंह — लता मंगेश्कर: सुरों की अमित दास्तान 'तुम मुझे यूँ भूला ना पाओगे'

30 डॉ. गीता दूबे — मन्नू भंडारी होने का मतलब

35 डॉ. कृष्ण कुमार — रमा जोशी संस्मृति

विमर्श :

39 कुमार विश्वबंधु — शिक्षा में नई प्रौद्योगिकी: नई चुनौतियाँ

शोधार्थी की कलम से :

44 रेणु चौधरी — अस्मिता का प्रश्न और स्त्री

47 परमजीत कुमार पंडित — जितेंद्र श्रीवास्तव की कविताओं में दलित एवं वंचित जीवन

55 पीयूष कुमार — राजेश जोशी की कविता में अलंकार–योजना

59 महात्मा पाण्डेय — हिंदी की दलित आत्मकथाओं के विशेष संदर्भ में

कविता :

64 पूनम सिंह — सप्तवेदी, बंजर तोड़ने की जिद्दी जिद, ओ मेरे एकांत

66 उमेश पंकज — मेरे होने से, जो मुट्ठी में है, जो मुट्ठी में है–2

शो ध स मी क्ष ण सृ ज न सं चा र

67 केशव शरण	आज हमारा प्यार, जनपद के एक कोने में, चकित दृग, बीच पुल के
68 मनोज मिश्र	इंसान नहीं रहा इंसान, पशुत्व बनाम मनुष्यत्व
69 रेणुका अस्थाना	बावरा मन, समय, दोस्ती
70 जावेद खान	विद्रोह अंततः एक करुणा है, उम्मीद, दास का सर

कहानी :

71 रूपसिंह चंदेल	पुरस्कार
77 सुषमा मुनींद्र	ज्ञानपीठ
82 डॉ.रंजना जायसवाल	खोमचें भर मुहब्बत
86 महेश कुमार केशरी	अंतिम बार

समीक्षा :

89 योगेश तिवारी	ग्लोबल गाँव के दानव
96 मृत्युंजय पाण्डेय	स्त्री मन की तस्वीर
101 डॉ. सुलोचना दास	अथ कोरोना कथा : कोरोजीवी कविताएं

पुस्तकायन :

108 रानी सुमिता	आलोचना के सामानांतर
112 मुहम्मद जाकिर हुसैन	द रेड साड़ी : सोनिया गांधी की नाटकीय जीवनी

प्रवासी कलम :

117 पूनम सिन्हा	प्रवासी कवयित्री तिथि दानी से पूनम सिन्हा की बातचीत

साक्षात्कार :

120 डॉ. प्रकाश कु. अग्रवाल	साहित्य–संसार में चल रहे पाखंडों की पोल खोलना बहुत जरूरी है : डॉ. पंकज साहा

संस्तुति

साहित्य की खोज में हर्फ-हर्फ अमानवीय होती दुनियाँ से गुजरना रेत और राख के ऐसे ढूह तक ले जाकर छोड़ देती है जहाँ गर्द और गुबार आँखों में किरिच भर देते हैं.... बस..... ऐसा, कि कुछ न देखो और न ही कुछ सुनो, अगर कुछ महसूस होता है तो उसे उगलने की हिमाकत भी न करो, ऐसे में संवेदना का सैलाब उमड़ता ही रह जाता है और साहित्य की नदी सूखती ही चली जाती है। कितना कठिन और भयावह है इस समय के बाहर झाँकना, हिंसा, रक्तपात, विध्वंस एवं यंत्रणा से पीड़ित मानवता सिसक रही है। ठीक सौ वर्ष पहले टी. एस. एलियट भी ऐसे ही भयावह अनुभव से गुजर रहे थे, उनकी अभिव्यक्ति की आँधी ने 'द वेस्ट लैंड' को रुपायित किया। पाँच खण्डों में लिखी लंबी कविता में 'ग्रेव यार्ड' का खण्ड अवसाद की गहरी तस्वीर उकेरता है, इन दो वर्षों में हमारी दुनियाँ फिर से ग्रेवयार्ड में परिणत होती जा रही है, हम अपने अतीत में मुड़कर सौ वर्ष पहले के हिन्दी साहित्य संसार का सिंहावलोकन करने पर सेवासदन, प्रेमाश्रम, रंगभूमि के साथ साथ छायावादी कविताओं की भावसंवलित नई चेतना की गुहार देखते हैं। वर्तमान में प्रक्षेपित विगत का प्रकाश आने वाले दिनों में साहित्य के माध्यम से मानवीय मूल्यों को जन जन तक उजागर करेगा। खौफजदा, स्याह समय नई सुबह का आसमान अवश्य टांकेगा, साहित्य अपनी धार से गर्द और गुबार अवश्य छाँटेगा..... ऐसी ही कोशिश में संलग्न हम और आप नकारात्मक स्थितियों से लड़कर सकारात्मक मुकाम तक अवश्य पहुंचेंगे।

संपादक